राजस्थान पुलिस अकादमी, जयपुर
Course report of course on "Change Management"
दिनांक 25- 27 सितम्बर, 2017

परिवर्तन अवश्यम्भावी है, परिवर्तन का सतत विवेचन किया जाता रहना चाहिए। इन्हीं मूल विषयों पर राजस्थान पुलिस अकादमी में 25-27 सितम्बर, 2017 तक तीन दिवसीय विशिष्ट प्रशिक्षण कोर्स "Change Management" का आयोजन किया गया।

इस विशिष्ट कार्से के लिए विषय विशेषज्ञों से विचार विमर्श करने के उपरान्त तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारूप तैयार किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राजस्थान के विभिन्न जिलों तथा यूनिटों से उप निरीक्षक से पुलिस निरीक्षक स्तर के कुल 30 पुलिस अधिकारियों ने भाग लिया।

प्रथम दिवस के प्रथम सत्र में डॉ. मानवेन्द्र सिंह पाहवा, मणिपाल विश्वविद्यालय, जयपुर ने परिवर्तन के उद्देश्यों पर चर्चा करते हुए कहा कि जिन उद्देश्यों के लिए बदलाव ला रहे हैं उनका प्रबन्धन इस प्रकार किया जाना चाहिए जिससे संस्था तथा व्यक्तिगत उद्देश्यों की शीघ्रातिशीघ्र प्राप्ति हो।

प्रथम दिवस के द्वितीय सत्र में श्री रमेश अरोड़ा ने परिवर्तन प्रबन्धन के लिए समय प्रबन्धन को आवश्यक बताया। उन्होंने कहा समय को कम या ज्यादा नहीं किया जा सकता है। अत: समय प्रबन्धन के संदर्भ व्यक्ति को समय के साथ स्वंय को व्यवस्थित करना होगा तभी समय प्रबन्धन सम्भव है।

प्रथम दिवस के तृतीय सत्र में डॉ. अनुकृति शर्मा, एसोसियट प्रोफेसर, कोटा विश्वविद्यालय ने अपने व्याख्यान में संप्रेषण को परिवर्तन का सशक्त माध्यम बताया उन्होंने बताया कि नयी शुरूआत करने के लिए क्या कहा जाये यह जितना महत्वपूर्ण है उतना ही क्या नहीं कहा जाये भी महत्वपूर्ण है। बेहतर संप्रेषण परिवर्तन में सहायक है।

प्रथम दिन के चतुर्थ सत्र में प्रोफेसर अनिता हाड़ा, आई0 आई0 एस0, विश्वविद्यालय, जयपुर ने परिवर्तन के प्रकार तथा परिवर्तन में आने वाले प्रतिरोध के बारे में विस्तृत चर्चा की उन्होंने बताया कर्मचारी परिवर्तन का प्रतिरोध करते हैं जबकि प्ररिवर्तन का स्वागत किया जाना चाहिए।

द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में डॉ अनिल मेहता, प्रोफेसर मणिपाल विश्वविद्यालय, जयपुर ने तनाव पर चर्चा करते हुए कहा कि व्यक्ति परिवर्तन के साथ स्वंय को ढालने पर कई बार तनाव/थकान से ग्रसित हो जाता है लेकिन सकारात्मक सोच एवम् जीवन शैली में बदलाव के साथ तनाव का प्रबन्धन किया जा सकता है।

द्वितीय दिवस के द्वितीय सत्र में डॉ अनिल मेहता, प्रोफेसर मणिपाल विश्वविद्यालय, जयपुर ने "Change Management" के विभिन्न स्वरूप तथा इसकी आवश्यकता बताते हुए बदलाव में आने वाली बाधाओं तथा बाधाओं को दूर करने के संभावित उपाय सुझाये। उन्होंने कहा बदलाव समय सापेक्ष है।

द्वितीय दिवस के तृतीय सत्र में प्रीन्सी थॉमस, असिस्टेंट प्रोफेसर आई0 आई0 एस0, विश्वविद्यालय, जयपुर ने अपने व्याख्यान में पारिवारिक एवम् व्यवसायिक जीवन में आने वाले बदलावों के मध्य सन्तुलन को विभिन्न मॉडल द्वारा समझाया। उन्होंने कहा इस सन्तुलन से ही व्यक्ति बदलाव में विकास कर सकता है।

द्वितीय दिवस के चतुर्थ सत्र में डॉ0 एन0डी0आर0 माथुर सेवानिवृत प्रोफेसर, आर्थिक प्रशासन एवम् वित्तीय प्रबन्धन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने अपने व्याख्यान में सकारात्मक परिवर्तन हेतु रचनात्मक तथा सृजनात्मक पर जोर देते हुए कहा कि परिवर्तन अपरिहार्य है इसे रोका नहीं जा सकता समय के साथ अपनी रचनात्मक तथा सृजनात्मक को विकसित कर नये विचार के साथ ही व्यक्ति बदलाव की बयार में स्वंय को बचा सकता है।

तृतीय दिवस के प्रथम सत्र में डॉ नवीन माथुर, प्रोफेसर व्यावसायिक, प्रशासन विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने नेतृत्व को परिवर्तन के लिए अतिआवश्यक बाताते हुए संगठन में परिवर्तन हेतु शीर्ष नेतृत्व के सशक्तीकरण पर बल देते हुए कहा कि किसी भी संगठन के लिए अपने- आप को बदलती परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में नेतृत्व महत्वपूर्ण है। नेतत्व ही वह शक्ति है जो संगठन के व्यक्तियों को एकजुट कर उद्धेश्यों की प्राप्ति में सहायक है।

तृतीय दिवस के द्वितीय सत्र में प्रोफेसर विद्या जैन, भूतपूर्व प्राचार्य महारानी कॉलेज राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर बदलाव के परिप्रेक्ष में गांधी जी के विचार को रखते हुए कहा कि व्यक्ति को सर्वप्रथम बदलाव की शुरूआत स्वंय से करनी चाहिए तभी वह समाज में बदलाव लाने में सक्षम हो सकता है।

तृतीय दिवस के अन्तिम सत्र में डॉ. एन.एम. शर्मा, व्यावसायिक प्रशासन राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने आर्थिक भौतिक संसाधन की तुलना में सतत् परिवर्तन हेतु मानव संसाधन के विकास पर जोर दिया।

समापन सत्र में डॉ. एम. के. देवराजन, सेवानिवृत पुलिस महानिदेशक ने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विभिन्न वक्ताओं द्वारा दिए गए व्याख्यानों पर चर्चा की तथा इस संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए परिवर्तन को सबसे स्थिर बताया एवं पुलिस अधिकारियों के लिए भी समय के अनुरूप आवश्यक बताया। पुलिस अधिकारियों को सहभागिता प्रमाण- पत्र अतिथि महोदय द्वारा वितिरित किये गये। कार्यक्रम के अन्त में प्रशिक्षण कार्यक्रम निदेशक डॉ. सुमन ढाका ने मुख्य अतिथि महोदय एवं सहभागी पुलिस अधिकारियों का आभार व्यक्त किया।